संवाद की तह में

डॉ. सूरज पालीवाल

संवाद की तह में

डॉ. सूरज पालीवाल

रुढ़िवादी संस्कृति के विरोध में संघर्षरत्

तथा

नयी जन-संस्कृति के सृजन में संलग्न इस महादेश की लघु-पत्रिकाओं

एवं

उनके संपादकों

को

डॉ. सूरज पालीवाल

जन्म- मथुरा जिले में यमुना के खादर में बसे गाँव बरौठा में

शिक्षा- प्रारंभिक शिक्षा गाँव में तथा उच्च-शिक्षा अलीगढ़ मुस्लिम विश्व-विद्यालय, अलीगढ़ में।

प्रकाशित कृतियां-

1- टीका प्रधान - कहानी संग्रह

2- जंगल - कहानी संग्रह

3- रचना का सामाजिक आधार आलोचना।

4- फणीश्वरनाथ रेणु का कथा-संसार आलोचना

5- संवाद की तह में

- आलोचना

-राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित राजस्थान के प्रतिनिधि

कहानी- कार विषयक कृति

"तपती धरती का पेड़" में चयनित कहानीकार

-जानी-मानी पत्रिकाओं में नियमित कहानी, आलोचनात्मक आलेख एवं समीक्षा लेखन

- "वर्तमान साहित्य" पत्रिका के संपादक मंडल में

संप्रति- जयनारायण व्यास

विश्वविद्यालय, जोधपुर के हिंदी विभाग में अध्यापन

संपर्क- 71, सेण्ट्रल स्कूल स्कीम, जोधपुर, 342011

भूमिका

आलोचना की यह मेरी तीसरी पुस्तक है। यह पुस्तक "संवाद की तह में" उन कारणों की तलाश करती है, जो पूंजीवादी उपभोक्ता अप-संस्कृति के दौर में साहित्य को समाज से अलग कर रहे है। साहित्य समाज से कितना अलग हो रहा है, यह विवाद का विषय हो सकता है, लेकिन साहित्य में सामाजिक-जीवन की उपेक्षा की जा रही है, यह संवाद का विषय भी है और मुख्य बिन्दु भी। इस बिन्दु पर हर साहित्यकार बराबरी से चर्चा भी कर सकता है और उन कारणों पर प्रकाश भी डाल सकता है, जिस वजह से ये कारण महत्वपूर्ण बने।

जीवन में रागात्मकता की कमी के कारण यांत्रिकता आ रही है, फलत: सम्बन्धों में एक निर्जीव-सी औपचारिकता भी आई है। साहित्य इस निर्जीव-सी औपचारिकता से लड़ाई लड़ सकता है और लड़ेगा तो किन स्तरों पर ? यह चिंता हमारी सबकी है। यह युग-प्रभाव नहीं युग चिंता है। रूस में साम्यवादी शासन तंत्र की विफलता ने इस चिंता को और भी घना कर दिया है। किंतु क्या रूस की विफलता सही अर्थों में "साम्यवाद" की विफलता है या उस विचार की मृत्यु जो "शोषण और अत्याचार के विरूद्ध संगठित रूप मे लड़ना सिखाता है।" यह पुस्तक वाम-लेखन के समक्ष घिर आये अंधेरे का, अनवरत् सुख की मानवीय आकांक्षा के प्रकाश में मूल्यांकन करती है।

निरंतर संवाद हमारी पहाड़-सी चिंताओं को दूर कर सकने में सहायक होते हैं। लेकिन "संवाद की तह में" मानवीय मूल्य और सामाजिक चिंताओं का होना जरुरी है। संवाद में सबसे बड़ा खतरा वैयक्तिक सुख है, साहित्य की सही समझ और रचनात्मक वैशिष्ट्य हो उसे सामाजिक सुख बनाता है। यह पुस्तक सामाजिक सुख की प्राप्ति और उसके प्रसार की कामना की अभिव्यक्ति के रुप में लिखे गये साहित्य की परख कर "संवाद की तह में" स्थापित जीवन-संवेदनाओं को सामने लायेगी ऐसा प्रयास किया है। यह प्रयास कितना सफल हो सका है, इसका मूल्यांकन तो सुधी पाठक ही कर सकेंगे।

इस पुस्तक में संग्रहीत पंद्रह आलेख लघु-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुये हैं, जिन्हें लिखवाने की प्रेरणा और आयह उनके सुधी-संपादाकों का ही रहा है और अब इन आलेखों को पुस्तक रुप देने का सम्पूर्ण प्रयास "ओर"

पत्रिका के संपादक एवं हमारे समय के महत्वपूर्ण कवि विजेंद्रजी का है। कवि-पली भी इस पुस्तक के प्रकाशन में मेरे से अधिक रुचि रखती रही हैं। दोनों के प्रति मैं हृदय से आभारी हूं।

गुरुवर प्रो० कुंवरपाल सिंह और कथाकार डॉ. नमिता सिंह से साहित्य का समझने की जो दृष्टि पाई है, उसी दृष्टि के प्रकाश में किया गया यह किंचित् प्रयास है। गुरुऋण से मुक्ति औपचारिक वचनों से संभव नहीं है, यह उस सामाजिक दृष्टि के निरंतर प्रसार से ही संभव है। मैं सच्चे मन से इन दोनों के प्रति प्रणत हूं। उपन्यासकार तथा "वर्तमान साहित्य" पत्रिका के संपादक श्री विभूतिनारायण राय जिस आत्मीयता से लिखने को प्रेरित करते रहे है, उनके लिये धन्यवाद केवल दिखावा ही होगा। डॉ. जीवन सिंह लोकधर्मी आलोचना के सहद आलोचक हैं, जब भी मिले, लगातार हम साहित्यिक मुद्दों पुर घंटों बहसते रहे हैं, उस बहस से मैं जो कुछ भी सीख पाया हूं, उनके प्रति आदरपूर्वक कृतज्ञ हूं। मेरे प्रिय शिष्य शैलेंद्र कुलश्रेष्ठ की आँखों में मैंने जो चमक देखी है, वह इस पुस्तक को पढ़ने के बाद भी बनी रहे यह प्रयास किया गया है।

शोभा ने इन आलेखों को लिखने के पहले और छपने के बाद ध्यान से सुना-पढ़ा है। सच्ची साथी के रुप में उन्होंने जो सुझाव दिये है, उनकी परिणति ही यह पुस्तक है। इस अवसर पर कोई भी शब्द मेरी भावना को प्रकट कर पाने में असमर्थ है।

हंसा प्रकाशन की श्रीमती पुष्पादेवी नाटाणी ने जिस आत्मीयता से सुरुचि सम्पन्न पुस्तक प्रकाशित की है, उनके हृदय से आभारी हूं।

जोधपुर **डॉ. सूरज पालीवाल**

विषय-सूची

	अनुक्रम	पृष्ठ सं.
1)	वाम लेखन और वर्तमान संकट	7
2)	हमारा समय, लेखक और लेखक-संगठन	13
3)	रचना और युग परिवेश	19
4)	लघु पत्रिकाओं की सार्थकता	25
5)	साहित्य में लोकप्रियता का सवाल	31
6)	रचना और आलोचना का अंत: सम्बन्ध	37
7)	शमशेर का गद्य: कविता और विचार का द्वंद्व	44
8)	भक्ति काव्य में नारी की स्थिति	50
9)	समकालीन जीवन की चुनौतियां	59
10)	राजनीतिक जटिलताओं की अभिव्यक्ति	66
11)	'मैला आचल' में जन-चेतना का स्वरूप	73
12)	सांप्रदायिक समस्या और हिंदी उपन्यास	81
13)	कविता का प्रयोजन	90
14)	जीवन-संवेदन की सहज-जागरूक कविता	97
15)	हिन्दी कविता की लोक-परम्परा	104

वाम लेखन और वर्तमान संकट

वाम लेखन के संदर्भ में जब वर्तमान संकट की बातें होती हैं तो हम रूस की घटनाओं पर असंतोष और चिंता व्यक्त करके चुप हो जाते है। यह ठीक है कि रूस में जिस प्रकार साम्यवादी व्यवस्था का पतन हुआ और उसके विरोध में साम्राज्यवादी ताकतों ने एकजुट होकर रूस की जो तस्वीर विश्व के समक्ष प्रस्तुत की, उससे चिंता अवश्य होती है लेकिन हम इन घटनाओं के मूल में जायें तो यह बात साफ हो जाती है कि साम्यवादी आदर्श के मॉडल के रूप में जिस प्रकार रूस को हमारे सामने प्रस्तुत किया जा रहा था वास्तव में वह वैसा था नहीं। फिर भी बचपन से हम जो सुनते आये हैं, उसे भुलाना और झूठा करार देना, असंभव नहीं तो कठिन अवश्य है। यह कठिनाई मोह के आवरण के कारण है इसलिये उसे जितना जल्दी हो सके उतना जल्दी उतार कर वास्तविकताओं के आलोक में मूल्यांकन किया जाना जरुरी है। दूसरी परेशानी यह कि जिस प्रकार पूँजीवाद अपने शिकंजे को हमारे देश में कसता जा रहा है, उससे बेखबर होकर कब-तक जिया जा सकता है ? विदेशी पूँजी को न्योंता, अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष के समक्ष समर्पण, व्यक्तिगत पूँजी की अनिवार्यता को स्वीकार करके सार्वजनिक उद्यमों पर कुठाराघात, ग्रुप 7 के देशों की आधीनता को स्वीकार करना आदि ऐसे ज्वलत प्रश्न हैं जिन्हें समझे बिना हम वर्तमान संकट का मुकाबला नहीं कर सकते। रूसी घटनाओं को भी पूँजीवादी-साम्राज्यवाद से अलग करके नहीं देखा जाना चाहिये। इसलिये इस आलेख में रूस की घटनाओं के मूल कारण और भारतीय परिवेश में बढ़ते पूंजीवाद के संकटों के साये में लिखे जा रहे वाम लेखन की चुनौतियों को स्पष्ट करने का प्रयास है।

सबसे पहले रूस की घटनाओं को ही लें क्योंकि हिन्दी साहित्य में प्रगतिवादी आदोलन और प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना के मूल में रूस की क्रांति ही थी इसलिये रूस का प्रभाव हिन्दी-जगत पर अन्य साम्यवादी देशों से अधिक रहा है अत: स्पष्ट है कि रुस के पतन ने हिंदी लेखन को प्रभावित किया होगा यह मानकर चलने में कोई परेशानी नहीं है। भारतीय साम्यवादियों पर रूस का प्रभाव इतना था कि छोटे से छोटा कार्यकर्ता भी यही चाहता था कि एक बार रूस के दर्शन कर आये, लेखक चाहता था कि सोवियत लेंड नेहरु अवार्ड मिलने से ही वह बड़ा कम्युनिस्ट लेखक बन सकता है। परिणाम यह निकला कि जिस प्रकार पोप ने स्वर्ग जाने के टिकट बेचने